18.बनारसीदास: ये जौनपुर के रहनेवाले एक जैन जौहरी थे जो आमेर में भी रहा करते थे। इनके पिता का नाम खड़गसेन था। ये संवत् 1643 में उत्पन्न हुए थे। इन्होंने संवत् 1698 तक का अपना जीवनवृत्त अर्ध्दकथानक नामक ग्रंथ में दिया है। पुराने हिन्दी साहित्य में यही एक आत्मचरित मिलता है, इससे इसका महत्व बहुत अधिक है। इस ग्रंथ से पता चलता है कि युवावस्था में इनका आचरण अच्छा न था और इन्हें कुष्ट रोग भी हो गया था। पर पीछे ये सँभल गए। ये पहले श्रृंगार रस की कविता किया करते थे, पर पीछे ज्ञान हो जाने पर इन्होंने वे सब कविताएँ गोमती नदी में फेंक दीं और ज्ञानोपदेशपूर्ण कविताएँ करने लगे। कुछ उपदेश इनके ब्रजभाषा गद्य में भी हैं। इन्होंने जैनधर्म संबंधी अनेक पुस्तकों के सारांश हिन्दी में कहे हैं। अब तक इनकी बनाई इतनी पुस्तकों का पता चला है,

बनारसी विलास (फुटकल कवित्तों का संग्रह), नाटक समयसार (कुंदकुंदाचार्य कृत ग्रंथ का सार), नाममाला (कोश), अर्ध्दकथानक, बनारसी पद्ध ति मोक्षपदी, धारुववंदना, कल्याणमंदिर भाषा, वेदनिर्णय पंचाशिका, मारगन विद्या।

इनकी रचना शैली पुष्ट है और इनकी कविता दादूपंथी सुंदरदासजी की कविता से मिलती जुलती है। कुछ उदाहरण लीजिए,

भोंदू! ते हिरदय की ऑखें।

जे करबैं अपनी सुख संपति भ्रम की संपति भाखैं

Scanned with CamScanner

जिन ऑखिन सों निरखि भेद गुन ज्ञानी ज्ञान विचारैं।

जिन ऑखिन सों लखि सरूप मुनि ध्यान धारना धारैं

काया सों विचार प्रीति, माया ही मेंहार जीत,

लिए हठ रीति जैसे हारिल की लकरी।

चंगुल के जोर जैसे गोह गहि रहै भूमि,

त्यौं ही पाँय गाड़ै पै न छाँडै टेक पकरी।

मोह की मरोर सों मरम को न ठौर पावैं,

धावैं चहुँ ओर ज्यौं बढ़ावैं जाल मकरी।

ऐसी दुरबुद्धि भूलि, झूठ के झरोखे भूलि,

फूली फिरैं ममता जँजीरन सों जकरी।

Scanned with CamScanner